40/6/9

डा. एस. अय्यप्पन
सचिव एवं महानिदेशक
Dr. S. AYYAPPAN
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एव
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE, KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629; 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

अपील

हिन्दी दिवस की सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

विचारों के आदान-प्रदान और भावों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। विश्व में अनेक भाषाएं हैं जिनका प्रयोग उस क्षेत्र के निवासी आपसी संवाद और लेखन में करते हैं।

भारत एक बहुभाषी देश है। अलग-अलग भाषा-भाषी होंते हुए भी एक सामाजिक संस्कृति हमारी पहचान है। भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी है। हिन्दी ने राष्ट्र को जोड़ने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, साथ ही यह विश्वफलक में अपनी एक नई पहचान भी बनाती जा रही है। आज हिन्दी ने विश्व मंच पर अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई है। आज विश्व के लोग भारत की ओर सकारात्मक रूप से देख रहे हैं तथा उन्हें हिन्दी एक बड़ी संभावनाओं वाले बाजार तक पहुंचाने वाली भाषा नजर आती है।

हिन्दी मूलरूप से संस्कृत से ही विकसित हुई है जो विशुद्ध वैज्ञानिक भाषा है। ऐसी विशुद्ध वैज्ञानिक भाषा में जब विज्ञान लिखा जाएगा तो उसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद आदि में विशाल ज्ञान भरा पड़ा है।

हमें अपनी भाषा में कार्य करने पर संतोष होना चाहिए। विज्ञान जैसे जटिल विषय को हम सरल भाषा में लिखने का प्रयास करें तो आम जनता तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। मुझे विश्व के अनेक देशों में जाने का मौका मिला है।

हिन्दी सेल
आनंद
6 Sep 2013

अधिकतर देश अपने अनुसंधान कार्य को अपनी भाषा में करते हैं। अपनी भाषा से लागाव होना अपने देश के प्रति हमारे सम्मान को प्रदर्शित करता है।

अब वक्त आ गया है कि हिन्दी को हिन्दी कक्ष से बाहर लाया जाए। इसे मात्र हिन्दीविभाग का कार्य न मानकर कार्यालय की मुख्य धारा से जोड़ा जाए। प्रत्येक संस्थान/केन्द्र के विभागाध्यक्ष अपने विभाग के सामान्य कामकाज में इसे माध्यम के रूप में अपनाए। हिन्दी के कार्यक्रम जैसे कार्यशालाएं, संगोष्ठियां, हिन्दी दिवस/ सप्ताह/ पखवाड़ा/ माह हिन्दी विभाग के कार्य के रूप में न लिए जाएं बल्कि पूरे कार्यालय को इसमें भागीदार बनाया जाए। कुछ कार्यालयों में इस प्रकार के प्रयास प्रारम्भ भी हो चुके हैं। कई संस्थानों में वैज्ञानिक संगोष्ठियां हिन्दी में की गई हैं, जो इस बात का सबूत है कि हमारे वैज्ञानिक अपने-अपने विषयों पर हिन्दी में आलेख लिख सकते हैं हमारी आंतरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियां इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। निश्चित ही हिन्दी में वह क्षमता है कि वह विश्व भाषा के रूप में विश्वपटल पर विराजमान हो। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम बिना अनुवाद का सहारा लिए अपना दिन-प्रतिदिन का सरकारी कामकाज हिन्दी में करें ताकि वैज्ञानिक उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने में सफल हो सकें।

आइए, इस अवसर पर हम सब मिलकर यह प्रण करें कि हम राजभाषा का अधिकाधिक सम्मान करते हुए अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

मैं, परिषद व इसके संस्थानों में इस अवसर पर आयोजित किए जाने वाले समारोहों की सफलता की कामना करता हूं।

एस. अय्यप्पन

(एस. अय्यप्पन)